पृष्ठ-संख्या १५५ से १६३

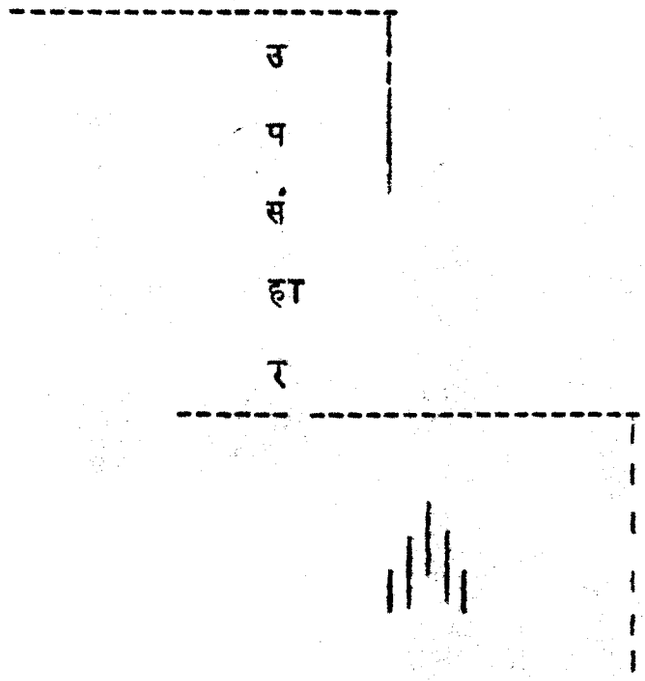

उ प सं हा र .....

आत्मा के बिना शरीर निश्चेतन होता है , उसी प्रकार चेतना के बिना कवि प्रतिभा होती है । अगर कवि अपने युग की राजनीतिक , सामाजिक, धार्मिक, साहित्यिक परिस्थिति से अनभिज्ञ रहा और उसकी चेतना सुप्तावस्था में रह गई तो वह अपने कवि-कर्तव्य से च्युत हो जाता है । काव्य के माध्यम से समग्र समाज को विकासोन्मुख करना कवि का आद्य कर्तव्य है । देश में गुलामी, विषमता, दीनता, ऊँच-नीच भावना आदि के होते हुए कवि का मधुर , कोमल काव्य निर्माण करना भी ठीक नहीं है । उसे कवि की चेतना नहीं कहा जा सकता । जो कवि हृदय अपने युग के प्रति तीव्र संवेदनात्मक, प्रतिक्रियात्मक और विद्रोही होता है , उसे ही कवि की चेतना कह सकते हैं ।

सामान्य मनुष्य की चेतना और कवि की चेतना में अंतर रहता है । सामा -न्य मनुष्य पर अपने आस-पास की परिस्थिति का असर अवश्य पडता है लेकिन अपनी प्रतिक्रिया को वह व्यक्त नहीं कर पाता । तथा अपने विचारों से दूसरों को प्रभावित नहीं कर सकता लेकिन कवि हृदय की चेतना हजारों पाठकों के मन में नवचेतन्य निर्माण कर सकती है ।

कविवर रामधारी सिंह 'दिनकर ' आधुनिक हिंदी के एक श्रेष्ठ कवि हैं। उनकी कविताओं में युग-चेतना पूर्ण रूप से अभिव्यक्त होना स्वाभाविक है । उन्होंने अपने युग को प्रभावित किया है । विश्वास है कि कल का युग 'दिनकर' का था, आज भी है और कल का भी उनका ही रहेगा । दिनकर में जागृत चेतना पाई जाती है । राजनीतिक परिस्थिति को देखकर कवि की चेतना क्रांतिकारी रूप में प्रकट होती है । धार्मिक परिस्थितियों को देखकर पुरानी रूढियों के खिलाफ आवाज उठाती है । सामाजिक परिस्थिति को देखकर वर्गविहीन समाज-

रचना की माँग करती है । साहित्यिक परिस्थिति को देखकर कला के क्षेत्र में नए विचारों का प्रतिपादन करती है । उनकी प्रत्येक रचना युगधर्म की परिचायक है ।

इस लघु शोध प्रबंध के विगत सात अध्यायों में कविवर दिनकर की कुछ प्रमुख रचनाओं के आधार से प्रस्तुत की हुई युगीन चेतना के मूल्यांकन से प्रस्तुत लेखिका इस निष्कर्ष पर पहुँचती है कि वे युग-चेता महान कृतिकार हैं ।

कवि दिनकर की काव्यकृतियों के माध्यम से निरूपित राजनीतिक चेतना के अनुशीलन से यह तथ्य उजागर होता है कि उनपर अपने युग के राष्ट्रीय और प्रगतिशील आंदोलन का ठोस प्रभाव रहा है । उनकी प्रगतिशीलता का अधिक अंश राजनीतिक चेतना के अंतर्गत आता है । दिनकर की राजनीतिक चेतनापरक कविताओं में हिंसात्मक मार्ग की स्वीकृति पाई जाती है । ' रेणुका ' संग्रह की कविताओं में कवि की हिंसात्मक प्रवृत्ति प्रकट हुई है । तांडव में शिव का आव्हान जनता की रौद्र भावनाओं से संबंध रखता है । ' हिमालय के प्रति ' में हिंसा की ओर कवि का झुकाव अधिक रहा है । कवि गांधी नीति की जगह आतंकवाद और रक्तिम क्रांति को महत्त्व देते हैं । ' कस्मैदेवाय ' में क्रांति की लालिमा भूषण की रंगीनी और लेनिन के दिल की क्रांति की चिनगारी की तरह फूट पड़ती है । ' रेणुका ' में क्रांतिपरक राजनीतिक चेतना सशक्त रूप में व्यक्त हुई है । रेणुका की तरह हुंकार की अधिकांश कविताएँ क्रांतिकारी भावों से भरी हुई हैं । यहाँ कवि एक उग्रवादी क्रांतिकारी कवि रूप में उपस्थित होते हैं । रेणुका की क्रांतिकारी भावना हुंकार में भड़क उठी । हुंकार की जिन कविताओं में क्रांति और आक्रोश का स्वर मुखरित हुआ है वे कविताएँ इस प्रकार हैं । स्वर्गदहन, आलोकधन्वा , चाह एक , दिगंबरी, अनल किरीट , मीख और विपथगा आमुख में कवि कल्पना लोक में विहार करनेवाला कवि वर्तमान के करुण क्रंदन को

सुनकर वास्तविकता में लौट पड़ा । द्विधा मन:स्थिति में पड़े हुए कवि ने क्रांति के मार्ग को अपनाया । विपथगा में क्रांति एक भाव मात्र नहीं रही वह सशरीरी मानवी हो गई है । दिगंबरी में कवि ने सिर्फ क्रांति की कल्पना ही नहीं की उसे आते हुए देखा है । हुंकार का रचनाकाल देश में राजनीतिक दासता, सामाजिक शोषण , उत्पीडन और रोदन क्रंदन से उत्पन्न निराशा का काल था । इसी वजह से हुंकार में क्रांति का रूप और भी स्पष्ट हो गया है । कुरुक्षेत्र में कवि ने अधिकारों की माँग के लिए क्रांति पथ पर अग्रसर होने का संदेश दिया है और गांधी-नीति का खंडन किया है । गांधी जी के अहिंसा तत्त्व को कवि ने कायरता का प्रतीक माना है और युद्ध की अनिवार्यता पर बल दिया है ।

दिनकर जिस युग के कवि हैं उस युग में राजनीतिक उथल पुथल हो रही थी । हिंदुस्तान के साथ सारे विश्व में राजनीति नया मोड लेते हुए आगे बढ रही थी । मार्क्स की क्रांति की झांझा के लपेटें में दिनकर भी आ गए । इस लिए दिनकर के काव्य में विश्वराजनीति और भारतीय राजनीति की चेतना पाई जाती है । उन्होंने गांधी के प्रति आदर व्यक्त किया है । लेकिन गांधी के अहिंसावाद सिद्धांत की आलोचना की है । इस प्रकार दिनकर की राजनीतिक चेतना में क्रांति का तीव्र स्वर गूंज उठा है ।

दिनकर की काव्यकृतियों के माध्यम से निरूपित सामाजिक चेतना के अनुशीलन से यह तथ्य उजागर होता है कि एक प्रगतिशील कवि होने के नाते उन्होंने यथार्थ को वस्तुगत एवं सामाजिक रूप में ग्रहण किया है । सामाजिक यथार्थ का वैज्ञानिक एवं क्रांतिकारी दृष्टि से स्वीकार किया है और वर्गविहीन समाजव्यवस्था की स्थापना के रूप में समाधान खोजा है । हुंकार संग्रह की विपथगा , वनफूलों की ओर, हाहाकार में कवि ने वर्गभेद की ओर सबका ध्यान आकृष्ट किया है । आर्थिक शोषण के प्रसंग में दिनकर की सामाजिक चेतना

विपथगा में व्यक्त हुई है । ' वनफूलों की ओर ' में कवि ने शोषित एवं पीडित किसान को अपने काव्य का विषय बनाया है । ' हाहाकार ' में किसानों की दुर्दशा को वाणी दी है । ग्रामीण चित्रण में कवि की सामाजिक चेतना यथार्थ दृष्टि रखती है । दिनकर वर्ग विषमता को नष्ट करके साम्यवाद स्थापन करने की आकांक्षा रखते हैं । कुरुक्षेत्र में दिनकर की सामाजिक चेतना साम्यवादी विचारों को स्पष्ट करती है । कुरुक्षेत्र की सामाजिक चेतना में अप्रत्यक्ष रूप में मार्क्सवादी धारा के दर्शन होते हैं । वर्गसंघर्ष तथा आर्थिक विषमता को मिटाने के लिए हिंसा केवल आवश्यक नहीं, अनिवार्य है । इस प्रकार दिनकर का स्पष्ट मत है । जिस प्रकार वर्गभेद को नष्ट करने के लिए कवि वर्ग-विहीन समाजव्यवस्था की स्थापना चाहता है, उसी प्रकार वर्णभेद नष्ट करने के लिए वर्णव्यवस्था पर आधारित समाज रचना को बदलना चाहता है । हुंकार संग्रह की ' तकदीर का बँटवारा ' में कवि ने समाज में व्याप्त जातिभेद ही देश का बँटवारा करने पर तुले हुए हैं यह बात निडरता से कही है । रेणुका संग्रह की बोधिसत्व कविता की प्रेरणा अछूतोद्धार आंदोलन से ली गई है । रश्मिरथी में कवि ने कर्ण के महान गुणों का चित्रण करते हुए यह सिद्ध किया है कि कवि जन्म से नहीं बल्कि कर्म से। किसी भी वंश में उत्पन्न पुरुष अपने गुणों के कारण सम्मान योग्य है । कवि जन्म से नहीं बल्कि कर्म से मनुष्य की जाति निश्चित करना चाहता है । यहाँ कवि ने सामाजिक रूढियों पर प्रहार कर के उस दलदल से समाज को बाहर लाने के लिए कर्ण जैसे महान व्यक्तित्व की कामना की है ।

वर्ण भेद, वर्णभेद की समस्या के साथ कवि ने समाज में व्याप्त नारी-शोषण का चित्रण रेणुका संग्रह की राजारानी, विधवा कविताओं में किया है । ' राजारानी ' में नारी जाति पर होनेवाले अन्याय को दर्शाते हुए कवि ने उसे समान अधिकार दिलाने की माँग की है । ' विधवा' में विधवा की

समस्या को उठाया है । रश्मिरथी के कुंती के द्वारा नारी की विवशता को प्रकट करते हुए स्वार्थी समाज के प्रति आक्रोश व्यक्त किया है । उर्वशी में ओशिनरी के माध्यम से नारी की विवशता को बताकर उसके उज्ज्वल भविष्य की कामना की है । ओशनरी जो खुद अंधियारे में डूबी हुई है पर वह आनेवाले प्रकाशवान काल का इंतजार करती है । दिनकर ने जितनी व्यापकता के साथ क्रांति का विवेचन विश्लेषण किया है उतनी तीव्रता के साथ मानवतावाद का भी विवेचन किया है । कुरुक्षेत्र में युद्ध की समस्या का हल कवि ने यह सुझाया है कि सभी व्यक्तिगत स्वार्थ को भूलकर सामाजिक हित की सोचे तथा मानव मात्र के कल्याण के लिए प्रयत्नशील रहे । यहाँ कवि की मानवतावादी सामाजिक चेतना में विश्वशांति, विश्वबंधुत्व का भाव मिलता है । दिनकर की सामाजिक चेतना उच्च मानवीय मूल्यों की इस प्रकार प्रतिष्ठा करती है ।

दिनकर की काव्यकृतियों के माध्यम से निरूपित धार्मिक चेतना के अनुशीलन से यह तथ्य उजागर होता है कि दिनकर की धर्मप्रवण कर्तव्य परायणता रूढिबद्ध नहीं है । विकासोन्मुख है । धर्म के नाम पर होनेवाले ढोंग और आत्मवंचना का दिनकर प्रबल विरोध करते हैं । कुरुक्षेत्र में दिनकर की संपूर्ण धार्मिक चेतना का निरूपण हुआ है । यहाँ कवि ने विविध आयामों में अपनी धार्मिक चेतना प्रकट की है । कवि संन्यास का विरोध करके कर्तव्य कर्म करने के लिए प्रवृत्त करता है । कर्मण्यता का स्वीकार कर अकर्मण्यता पर प्रहार करता है । कवि भाग्यवादी न होकर कर्म वादी है। वह भाग्यवाद का खंडन करके कर्मवाद का समर्थन करता है । आत्मानंद की प्राप्ति का मार्ग बताते हुए कवि स्पष्ट करता है कि मानव मात्र को गले लगाने से उसके सुख-दु:ख का सहभागी बनने से , दीन दुर्बलों की सहायता करने से सच्चे आत्मानंद की प्राप्ति हो सकती है । इस प्रकार कुरुक्षेत्र में कवि के शंकाकुल हृदय का धर्म विषयक तर्क वितर्क भरा पडा है जो मस्तिष्क के स्तर पर प्रकट हुआ है । कवि की धार्मिक चेतना बाह्याडंबर पर व्यंग्य

करती है और मानव सेवा में ही धर्म की सार्थकता समझाती है ।

रश्मिरथी में दिनकर की धार्मिक चेतना यह सिद्ध करती है कि धर्म ध्येय में नहीं वह तो साधनों में छिपा रहता है । वह किसी भी संहारकारी कार्य में नहीं है । धर्म का सही मतलब यह बताते हैं कि समाजविरोधी शक्तियों से लडकर आगे चलने में ही जीवन की सार्थकता है । कवि ने अपने युग में नए धर्म का प्रतिपादन किया है । नए धर्मका कवि ने कर्ण धर्म कहा है ।

दिनकर की धार्मिक चेतना आध्यात्मिकता का एक नया आधार लेकर उर्वशी में व्यक्त हुई है । दिनकर ने नवीन विज्ञान को अध्यात्म के साथ संयुक्त किया है । और कामाध्यात्म की धारणा द्वारा नवीनता और मौलिकता का परिचय दिया है । दिनकर की काव्यकृतियों के माध्यम से निरूपित सांस्कृतिक चेतना के अनुशीलन से यह तथ्य उजागर होता है कि दिनकर ने वर्तमान को सचेत करने के लिए अपने साहित्य में भारतीय संस्कृति की प्रतिष्ठा की है । दिनकर की सांस्कृतिक चेतना में अतीत के प्रति मोह प्रकट होता है ।

रेणुका की कई कविताओं में अतीत का चित्रण किया है । कवि ने अतीत के चित्रण द्वारा वर्तमान जीवन में प्राण भरने का प्रयास किया है । दिनकर की सांस्कृतिक चेतना सर्वप्रथम रेणुका काव्यसंग्रह की ' हिमालय ' कविता में व्यक्त हुई है । यहाँ कवि पुरानी संस्कृति का स्मरण करता हुआ अतीत और वर्तमान के संतुलन को इंगित करता है । अतीत कालीन महत्त्व के नगरों, शासकों , धर्माचार्यों एवं शूरवीरों का स्मरण करके जन जागरण करना चाहते हैं । बोधिसत्व में कवि हिंदु संस्कृति में महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त करनेवाले गौतमबुद्ध के त्यागमयी जीवन के सामने नतमस्तक होता है । मिथिला में कवि ऐतिहासिक गौरव का चित्रण करता है । '' पाटली पुत्र की गंगा '' में कवि ने मगध और

वैशाली का गौरवगान करके अतीत के द्वारा वर्तमान को सचेत करने का प्रयास किया है । कस्मैदेवाय में कवि दिल्ली, मिथिला, नालंदा, वैशाली में पुराने वैभव को ढूँढने का प्रयत्न करता है ।

रश्मिरथी में भारतीय संस्कृति के आदर्श का कर्ण एक प्रतीक बन गया है । भारतीय संस्कृति का मूल तत्त्व त्याग , प्रेम सदाचरण है । कर्ण के चरित्र में ये विशेषताएँ पाई जाती हैं । उसका आदर्श कवि युग के सामने उपस्थित करके अपनी सजग सांस्कृतिक चेतना का प्रमाण देता है ।

उसी प्रकार कुरुक्षेत्र में युधिष्ठिर भारतीय संस्कृति के प्रतीक बन गए हैं। भारतीय संस्कृति में परोपकार , गर्व का त्याग , इन महान गुणों को अत्यधिक महत्त्व दिया गया है । युधिष्ठिर के जीवन का व्रत परोपकार ही था । उनकी साधना , तपस्या और अगाध चिंतन भारतीय संस्कृति से परिमार्जित तथा उसी के पोषक हैं । युधिष्ठिर के साथ भीष्म पितामह का समग्र चिंतन भारतीय संस्कृति से ओतप्रोत है । भारतीय संस्कृति एक विशाल दृष्टिकोण लिए हुए है । वह सिर्फ भारतीयों के नहीं विश्व के सभी प्राणियों के हृदयों में दया और प्रेम का अक्षय अनश्वर भाव निर्माण करना चाहती है । अपने युग में कवि ने युधिष्ठिर और भीष्म के द्वारा विश्वबंधुत्व , विश्वशांति तथा मानवता की भावनाओं का प्रसार करने का प्रयास किया है । कुरुक्षेत्र की आधारभूमि प्राचीन है । परंतु कवि ने सभ्यता और संस्कृति के जिन आदर्शों का चित्रण इस महाकाव्य में किया है वह युग को सचेत करनेवाला है । संक्षिप्त में यह कहा जा सकता है कि दिनकर की सांस्कृतिक चेतना इतिहास के संदर्भों से संपृक्त और अतीत गौरव से अनुस्यूत होकर वर्तमान जीवन की समस्याओं का हल ढूँढ निकालने में तत्पर रही है ।

दिनकर युग में साहित्यिक दृष्टिकोण में परिवर्तन हो रहा था । उस काल का अभिव्यंजना शिल्प विकासोन्मुख है । अपने युग से प्रभावित हुए दिनकर

के साहित्य के कलापक्ष में समय के अनुसार परिवर्तन मिलता है । आधुनिक काल के भारतेंदु युग से साहित्यिक चेतना में एक नया मोड पैदा हुआ । साहित्य में वास्तविकता की ओर अधिक ध्यान देने की प्रवृत्ति पनपने लगी । भारतेंदु ने यथार्थ परक साहित्य की नींव रखी । द्विवेदी युग में जीवन की वास्तविकताओं से साहित्य का संबंध टूटने नहीं पाया । छायावादी युग का साहित्य किशोर-कल्पना के पर लगाकर स्वप्निल सौंदर्य में विहार कर रहा था। इस पलायनशील प्रवृत्ति के विरुद्ध प्रगतिवादी आंदोलन खडा हुआ । अपने युग से प्रभावित दिनकर की साहित्यिक चेतना ने यथार्थ के धरातल पर अवस्थित रहकर आदर्श की ओर बढने का उपक्रम किया है । दिनकर मानवमात्र के कल्याण में ही साहित्य की परिपूर्ति समझाते हैं । काव्य प्रयोजन में आनंद को महत्त्व देते हैं । आनंद का पूर्ण रूप से विकास उर्वशी में पाया जाता है । दिनकर युग में बुद्धि और भावना का संघर्ष चल रहा था । दिनकर की साहित्यिक चेतना ने किसी एक पक्ष को न उठाकर दोनों के संतुलन पर जोर दिया । दिनकर का कुरुक्षेत्र एक विचारप्रधान महाकाव्य है । उसी प्रकार उर्वशी में काम की समस्या का समाधान बुद्धिवादी है ।

छायावादी कवि निराला से मुक्त छंद का निर्माण हुआ । छंदों के बंधन टूट गए । उनसे प्रभावित कवि दिनकर ने काव्य में मुक्त छंद को अपनाया । स्वतंत्र रूप से अपने अनुकूल छंद का निर्माण किया । दिनकर का कहना है, समय के साथ परिवर्तन आवश्यक है । यदि पुराने छंद कवि की मनोदशा के अनुकूल नहीं पडते तो वह अपने अनुकूल छंद का निर्माण कर सकता है ।

दिनकर के अनुसार युग और भाव के अनुकूल छंदों को ग्रहण न करने से अभिव्यक्ति बोझिल होती है । दिनकर की साहित्यिक चेतना में युग के अनुसार छंद परिवर्तन पाया जाता है । परंपरागत शास्त्रीय छंदों के घेरे में स्वयं को आबद्ध नहीं किया । नए कवि ने अतुकांत छंदों को अपनाया । कुरुक्षेत्र से लेकर

उर्वशी तक अतुकांत छंद समभाव से प्रतिष्ठित है ।

उस युग में अलंकार अनिवार्य न होकर भावों को अधिक स्पष्ट रूप से व्यक्त करने का साधन बन गया । दिनकर ने अपने काव्य में अपनी सूक्ष्म और वैज्ञानिक दृष्टि का परिचय दिया है । वे अलंकारों का प्रयोग काव्यगत गांभीर्य, बारीकी, संक्षिप्तता और सौंदर्यवर्धन के लिए करते हैं । उस युग में काव्य में बोझिल शब्दों का प्रयोग न करके बोलचाल की भाषा का प्रयोग करने की प्रवृत्ति बढ गई । अंग्रेजों के संपर्क में आने के कारण विदेशी शब्दों का प्रयोग होने लगा । दिनकर ने भावानुकूलता के लिए साधारण से साधारण शब्दों का प्रयोग किया है । उर्वशी में अंग्रेजी के शब्द और मुहावरों का प्रभाव दिखाई देता है । इस प्रकार पुराने छंद, अलंकार आदि परिपाटी का त्याग कर दिनकर की साहित्यिक चेतना कला-पक्ष की अपेक्षा भावपक्ष पर अधिक जोर देती है ।

०

पृष्ठ-संख्या १६४ से १६५

आधार एवं संदर्भ ग्रंथ सूची

आधार एवं संदर्भ-ग्रंथ सूची

(अ) आधार-ग्रंथ

दिनकर जी के काव्य :

(१) रेणुका , तृतीय संस्करण , १९५६, उदयाचल, पटना ।

(२) हुंकार , चतुर्थ संस्करण , १९५२ उदयाचल , पटना।

(३) कुरुक्षेत्र ; चतुर्थ संस्करण , १९५२ उदयाचल , पटना।

(४) रश्मिरथी, द्वितीय संस्करण,१९५४ श्री अजंता प्रेस लि. पटना

(५) उर्वशी , प्रथम संस्करण ।

(ब) संदर्भ ग्रंथ

(१) युगचारण दिनकर सावित्री सिन्हा, प्र. सं. १९६३, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली

(२) दिनकर - संपादिका : सावित्री सिन्हा, द्वि. सं.१९७० राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली.

(३) राष्ट्रकवि दिनकर और उनकी साहित्य साधना - संपादक : प्रतापचंद जैसवाल, प्र. सं.१९७६ समीक्षा लोक, आगरा ।

(४) दिनकर की साहित्य दृष्टि , सुशीला मिश्रा, प्र. सं.१९८३ अनुपम प्रकाशन पटना ।

(५) दिनकर के काव्य में क्रांतिमंत चेतना -- निधि भार्गव, प्र. सं.१९७६ कविता प्रकाशन, बीकानेर

(६) दिनकर के काव्य में मानवतावादी प्रेमचेतना - डॉ. मधुबाला प्र. सं.१९८५, तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली

..

(७) दिनकर का रचना संसार क्षोटेलाल दीक्षित, प्र. सं. १९७६, प्रतिमा प्रकाशन, इलाहाबाद

(८) दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय भावना - शिवकांत गोस्वामी, प्र.सं.१९८५ प्रगति प्रकाशन, आगरा

(९) हिंदी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि - डॉ. द्वारकाप्रसाद सक्सेना, च. सं. १९७७, विनोद पुस्तक मंदिर ,आगरा

(१०) आधुनिक हिंदी काव्य - डॉ. राजेंद्रप्रसाद मिश्र, ग्रंथम, कानपुर

(११) रश्मिलोक - रामधारीसिंह दिनकर स्टार पब्लिकेशन, दिल्ली

(१२) मिट्टी की ओर - दिनकर , उदयाचल प्रकाशन, पटना ।

(१३) दिनकर : वैचारिक क्रांति के परिवेश में - डॉ.पी आदेश्वरराव वाणी प्रकाशन दिल्ली.

(१४) आधुनिक हिंदी काव्य और नैतिक चेतना - राज वधवा, सन १९६९ कपूर प्रेस, दिल्ली.

(१५) आज के लोकप्रिय हिंदी कवि दिनकर - मन्मथनाथ गुप्त, आठवां संस्करण १९८१, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली.

(क) कोश

हिंदी --

(१) बृहत् हिंदी कोश - डॉ. कालिकाप्रसाद , राजवल्लभ सहाय मुकुंदीलाल श्रीवास्तव

अंग्रेजी

(१) ऑक्सफोर्ड एडव्हान्स्ड लर्नर्स डिक्शनरी आफ करंट इंग्लिश -- ए.एस. हॉर्नबि

०